भारत सरकार
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 512
बुधवार, 22 जुलाई, 2026 को उत्तर दिए जाने के लिए

भारत में वर्षा की कमी

†512. श्री वी.के श्रीकंदन:

क्या **पृथ्वी विज्ञान** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या भारत मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार, मानसून की प्रगति रूकने के कारण भारत में वर्षा में 35 प्रतिशत गिरावट हो गई है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
(ख) क्या वर्षा में आई उक्त कमी मुख्य रूप से उन क्षेत्रों में केंद्रित है जहां मानसून पहुंचने में विफल रहा है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
(ग) क्या मानसून के पहले चरण की गति धीमी पड़ जाने के कारण मध्य भारत को 63 प्रतिशत की कमी का सामना करना पड़ रहा है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और
(घ) क्या वैश्विक स्तर पर मौसम पूर्वानुमानकर्ताओं ने चेतावनी दी है कि यह एक 'सुपर अल नीनो' वर्ष हो सकता है यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
(डॉ. जितेंद्र सिंह)

(क) नहीं। पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (एमओईएस) के अधीन भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने पूरे देश में 35% वर्षा की कमी की रिपोर्ट नहीं की है। देश भर में वर्षा की दैनिक, साप्ताहिक, मासिक और ऋतुनिष्ठ आधार पर निगरानी की जाती है। वर्षा की किसी भी कमी का आकलन दीर्घावधि औसत (एलपीए) के आधार पर तत्संबंधी अवधि और क्षेत्र के लिए किया जाता है। वर्षा की स्थिति दक्षिण-पश्चिम मानसून ऋतु की प्रगति के दौरान स्थानिक और कालिक स्तर पर भिन्न होती है, और मानसून की अंतर-मौसमी परिवर्तनशीलता के कारण कुछ क्षेत्रों में या विशिष्ट अवधियों के दौरान अस्थायी कमी हो सकती है। 30 जून 2026 तक, संचयी अखिल भारतीय दक्षिण-पश्चिम मानसून वर्षा अपने दीर्घ कालिक औसत से 40% कम थी। 14 जुलाई 2026 तक, संचयी अखिल भारतीय दक्षिण-पश्चिम मानसून वर्षा अपने दीर्घ कालिक औसत से 21% कम थी।

(ख) नहीं। वर्षा की कमी केवल उन क्षेत्रों तक ही सीमित नहीं है जहां मानसून आगे नहीं बढ़ा है; यह उन क्षेत्रों में भी देखा गया है, जहां यह पहले ही आगे बढ़ चुका है। 1 जून से 14 जुलाई 2026 की अवधि के दौरान, देश भर के 36 मौसम विज्ञान सब-डिवीजन में से 19 में कम वर्षा हुई।

(ग) नहीं। जून 2026 के अंत तक, मध्य भारत में वर्षा के दीर्घकालिक औसत की तुलना में 50% की कमी दर्ज की गई। इसके पश्चात, इस क्षेत्र में 30 जून से 8 जुलाई 2026 तक पर्याप्त वर्षा हुई, जिससे वर्षा-न्यूनता काफी कम रह गई। 14 जुलाई 2026 तक, मध्य भारत में संचयी तौर पर वर्षा की कमी कम हुई है और यह अपने दीर्घकालिक औसत की तुलना में 11% कम है।

(घ) नही। भारत मौसम विज्ञान विभाग ने अन्य अंतरराष्ट्रीय जलवायु पूर्वानुमान केंद्रों के साथ, 2026 दक्षिण-पश्चिम मानसून ऋतु के दौरान अल नीनो की स्थिति बनने का पूर्वानुमान व्यक्त किया है। जून 2026 के दौरान, अल नीनो की स्थिति कमजोर रही है। जुलाई के दौरान यह कमजोर से लेकर मध्यम रहने, और अगस्त के दौरान मध्यम रहने, और सितंबर के अंत तक मध्यम से मजबूत रहने की संभावना है। ऐसी कोई आधिकारिक रूप से परिभाषित श्रेणी नहीं है जिसे "सुपर अल नीनो" कहा जाता है। परिचालन के दृष्टिकोण से, अल नीनो की घटनाओं को आमतौर पर भूमध्यरेखीय मध्य प्रशांत महासागर पर समुद्री सतह के तापमान की विसंगति स्तर के आधार पर कमजोर, मध्यम या मजबूत के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।

*****